CHETANA
INTERNATIONAL JOURNAL OF EDUCATION (CIJE)
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))
Impact Factor
SJIF 2023 - 7.286

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

गतिविधि–आधारित शिक्षण अधिगम का छात्रों पर प्रभाव

मनोज कंवर
रिसर्च स्कोलर, शिक्षा विभाग,
ज्योति विद्यापीठ, जयपुर, राजस्थान
डॉ मंजू शर्मा
प्रोफेसर, शिक्षा विभाग,
ज्योति विद्यापीठ, जयपुर, राजस्थान
Email- kanwarm122@gmail.com, Mobile- 7023255351

First draft received: 12.11.2023, Reviewed: 18.11.2023, Accepted: 28.11.2023, Final proof received: 29.12.2023

सार-संक्षेप

गतिविधि–आधारित शिक्षण अधिगम, शिक्षा के लिए एक विशेष दृष्टिकोण है जो इस विचार पर केंद्रित है कि छात्रों को गतिविधि आधारित कार्यों के माध्यम से संलग्न किया जाना चाहिए। यह शिक्षण के कुछ पारंपरिक रूपों के बिलकुल विपरीत कार्य करता है जिसमें एक शिक्षक व्याख्यान देता है या अन्य उन छात्रों को जानकारी देते है। गतिविधि–आधारित शिक्षण में, एक शिक्षक सूत्रधार का कार्य करता है, छात्रों को सीखने की प्रक्रिया के माध्यम से सहायता प्रदान करता है और उन्हें मार्गदर्शन प्रदान करता है। इस प्रकार के कार्यक्रम में विभिन्न कार्यों और कार्यों का उपयोग किया जा सकता है, जिससे छात्रों को शेष निष्क्रिय होने के बजाय सीखने की प्रक्रिया में सीधे शामिल होने की अनुमति मिलती है।

मुख्य शब्द : *गतिविधि–आधारित शिक्षण, सूत्रधार, सुनियोजित, योजनाबद्ध, सेवानिवृत्त आदि*

प्रस्तावना

गतिविधि–आधारित शिक्षण अधिगम की शुरुआत द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान हुई जिसमें एक अभिनव ब्रिटिश विचारक करिश्माई नेता के रूप में भारत आए और यहीं बसने का फैसला किया। उन्होंने भारत के ऋषि वैली स्कूल में पढ़ाना शुरू किया । ये ब्रिटिश काउंसिल में शामिल हो गए और कई वर्षों तक चेन्नई और बैंगलोर में काम किया। सेवानिवृत्त होने के पश्चात, वह कोलार जिले में रहने लगे और नील बाग नाम से एक स्कूल खोला। यह स्कूल हॉर्सबर्ग के नवीन विचारों पर आधारित था और रचनात्मक शिक्षण विधियों और सुनियोजित शिक्षण सामग्री के लिए जाना जाता था। इन शैक्षणिक सामग्रियों को व्यवस्थित रूप से योजनाबद्ध किया गया था, जिसमें रेखाचित्र, चित्र और कभी–कभार हास्य का स्पर्श शामिल था। बाद में, हॉर्सबर्ग ने नील बॉघ में एक शानदार पुस्तकालय बनाया, जो शिक्षकों और छात्रों के लिए सुलभ था। हॉर्सबर्ग की पहल बाद में एबीएल में एक अग्रणी मील का पत्थर साबित हुई। 2003 से गतिविधि–आधारित शिक्षा, पद्धति को भारत के चेन्नई के स्कूलों में लागू किया गया, जो बंधुआ मजदूरी से मुक्त हुए बच्चों के लिए विशेष शिक्षा प्रदान करता है।

गतिविधि–आधारित शिक्षण अधिगम, शिक्षा के लिए एक विशेष दृष्टिकोण है जो इस विचार पर केंद्रित है कि छात्रों को गतिविधि आधारित कार्यों के माध्यम से संलग्न किया जाना चाहिए। यह शिक्षण के कुछ पारंपरिक रूपों के बिलकुल विपरीत कार्य करता है जिसमें एक शिक्षक व्याख्यान देता है या अन्य उन छात्रों को जानकारी देते है। गतिविधि–आधारित शिक्षण में, एक शिक्षक सूत्रधार का कार्य करता है, छात्रों को सीखने की प्रक्रिया के माध्यम से सहायता प्रदान करता है और उन्हें मार्गदर्शन प्रदान करता है। इस प्रकार के कार्यक्रम में विभिन्न कार्यों और कार्यों का उपयोग किया जा सकता है, जिससे छात्रों को शेष निष्क्रिय होने के बजाय सीखने की प्रक्रिया में सीधे शामिल होने की अनुमति मिलती है।

गतिविधि–आधारित शिक्षण अधिगम

गतिविधि–आधारित शिक्षण अधिगम इस विचार में निहित है कि बच्चे जानकारी के निष्क्रिय प्राप्तकर्ता के बजाय सक्रिय शिक्षार्थी हैं। यदि बच्चों को स्वयं अन्वेषण करने का अवसर प्रदान किया जाए और सीखने का सर्वोत्तम माहौल प्रदान किया जाए, तो सीखना अधिक आनंददायक और लंबे समय तक चलने वाला हो जाता है। कक्षा में गतिविधि–आधारित शिक्षण अधिगम का प्रदर्शन करना

सरल शब्दों में गतिविधि–आधारित शिक्षण अधिगम से तात्पर्य सीखने की प्रक्रिया में मनोरंजक गतिविधियों को शामिल करने से है। गतिविधि–आधारित शिक्षण अधिगम बच्चों की सामाजिक प्रकृति को समझने के विचार पर केंद्रित है। देश भर में स्कूलों के अस्थायी रूप से बंद होने के साथ ,गतिविधि–आधारित शिक्षण अधिगम बच्चों को उनके घरों में विकास जारी रखने में मदद कर सकती है। गतिविधि–आधारित शिक्षण अधिगम छात्रों को स्वतंत्र जांच और समस्या–समाधान जैसी व्यावहारिक गतिविधियों के माध्यम से अपने सीखने के अनुभव में भाग लेने के लिए प्रेरित करती है। गतिविधि–आधारित शिक्षण अधिगम को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है।

शिक्षक केन्द्रित शिक्षण में शिक्षक का स्थान महत्वपूर्ण होता है और छात्र केन्द्रित शिक्षण में छात्र मुख्य भूमिका निभाता है। गतिविधि–आधारित शिक्षण की कुछ मुख्य विशेषताए है जो निम्नलिखित हैं;

1. छात्र अपने आप को विभिन्न तरीकों से व्यक्त कर पाते है – गतिविधि–आधारित शिक्षण अधिगम छात्रों को विभिन्न रचनात्मक तरीकों से खुद को व्यक्त करने की स्वतंत्रता प्रदान करती है। यह छात्रों को स्वयं समस्याओं का पता लगाने और हल करने का अधिकार देती है। गतिविधि–आधारित शिक्षण अधिगम छात्रों को केवल नोट्स लेने के बजाय यह कहने का अवसर भी प्रदान करती है कि उन्होंने क्या कार्य करके सीखा है।

2. कक्षाओं को रोचक बनाता है – कक्षाओं में शिक्षण–अधिगम कभी–कभी बहुत नीरस हो जाती हैं जिसके फलस्वरूप छात्र का अधिगम धीमा हो जाता है परन्तु इन कक्षाओं में गतिविधि–आधारित शिक्षण अधिगम शुरू करने से दिलचस्प हो रही हैं। यह छात्रों को बातचीत करने और एक–दूसरे को जानने की अनुमति देती है। शिक्षण–अधिगम में व्यक्तिगत शोध और अनुभव के माध्यम से जानकारी एकत्र करने में मदद करती है।

3. छात्रों में आत्मविश्वास एंव निर्णय लेने के योग्य बनाता है – गतिविधि–आधारित शिक्षण अधिगम एक स्व–निर्देशित सीखने के दृष्टिकोण से बनाई गई है। यह छात्रों को अपने स्वयं के प्रयोग करने और अपनी गलतियों से सीखने के लिए प्रोत्साहित करता है। छात्र अपने काम के लिए जवाबदेही लेना सीखते हैं और साथ ही अपने कार्यों को मान्यता प्राप्त महसूस करते हैं। गतिविधि–आधारित शिक्षण अधिगम का उद्देश्य कम उम्र में जिज्ञासु दिमाग विकसित करना है।

4. बच्चों के समग्र विकास में सहायक – गतिविधि–आधारित शिक्षण अधिगम बच्चों में सामाजिक कौशल विकसित करने में मदद करती है और उनमें टीम भावना को भी बढ़ावा देती है। यह प्राथमिक स्तर स्तर पर बच्चों के ज्ञान को बढ़ाने में मदद करता है। यह उन्हें अपने शैक्षिक वातावरण के बाहर ज्ञान प्राप्त करने और वास्तविकता जानने में सहायता करता है।

गतिविधि–आधारित शिक्षण का महत्व

गतिविधि आधारित शिक्षण अधिगम रचनात्मक सोच कौशल को विकसित करती है। समस्या–समाधान वाले खेलों और गतिविधियों का उपयोग करना बच्चों को दायरे से बाहर सोचने के लिए प्रेरित करने का एक शानदार तरीका है। जैसे–जैसे बच्चे स्कूल के माध्यम से आगे बढ़ते हैं, इन रचनात्मक और तर्क कौशल का निर्माण महत्वपूर्ण होता है। गतिविधि आधारित शिक्षण अधिगम में शिक्षक के बजाय छात्र पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। इसके माध्यम से बच्चें संलग्न रहते है और स्वयं कार्य को करके सिखते है। इसमें छात्रों का विभिनन प्रकार से सामाजिक, आर्थिक मानसिक और शारीरिक विकास संभव हो पाता है।

गतिविधि–आधारित शिक्षण अधिगम बच्चों को अपने ज्ञान और सोच को व्यक्त करने के तरीके में रचनात्मक होने के लिए प्रोत्साहित करती है। गतिविधि–आधारित शिक्षण पद्धति छात्रों को जो कुछ उन्होंने सीखा है उसे करने के साथ–साथ मौखिक रूप से प्रस्तुत करने के माध्यम से व्यक्त करने का अवसर प्रदान करती है।

गतिविधि आधारित शिक्षण अधिगम टीम वर्क कौशल में सुधार करती है और बच्चों को संलग्न महसूस करने में मदद करती है। प्रोजेक्ट के लिए बच्चों को छोटे समूहों में रखना फायदेमंद हो सकता है क्योंकि यह उन्हें आत्मविश्वासी बनने के लिए प्रोत्साहित करता है और कक्षा में सभी को यह महसूस कराता है कि उनका योगदान कक्षा के लिए महत्वपूर्ण है। गतिविधि आधारित शिक्षण अधिगम बच्चों को कई अलग–अलग सीखने की शैलियों से जोड़ती है, जिससे दृश्य, श्रवण और गतिज शिक्षार्थियों को भी लाभ होता है। ये छात्र अपनी सुनने, सूंघने, देखने और महसूस करने जैसी इंद्रियों की उत्तेजना के माध्यम से गतिविधियों में लगे रहते हैं।

गतिविधि–आधारित शिक्षण अधिगम वह रणनीतियाँ है जो छात्रों के लिए स्कूल को रोमांचक बनाती हैं, जिससे उन्हें यह याद रखने में मदद मिलती है कि उन्होंने क्या सीखा है। गतिविधि–आधारित शिक्षण अधिगम बच्चों के अनुकूल शिक्षा का एक उदाहरण है, जैसा कि भारत के शिक्षा का अधिकार (आरटीई) अधिनियम द्वारा अनिवार्य है।

गतिविधि–आधारित शिक्षण अधिगम एंव शिक्षार्थी

गतिविधि आधारित शिक्षण अधिगम के माध्यम से छात्र स्वतंत्र विकल्प बनाना सीखते हैं। कदमताल, पीटी, हाथ उपर निचे कराना, खेल, तुकबंदी, पेंटिंग और गीतों का उपयोग किसी अक्षर या वाक्यांश को सिखाना, वाक्य को आकार देना, गणित और विज्ञान करने या प्रत्येक माइल स्टोन के साथ एक अवधारणा को समझने के लिए किया जाता है। किसी विषय में सभी परिक्षाओं को पूरा करने के बाद, बच्चे को एक परीक्षा कार्ड प्राप्त होता है। यदि कोई बच्चा एक दिन के लिए गायब हो जाता है, तो वह वहीं से शुरू करता है जहां से उसने छोड़ा था, पुरानी पद्धति के विपरीत, जिसमें बच्चे को खुद ही पता लगाना पड़ता था कि उसने कहां से छोड़ा था और वह क्या भूल गया है।

जलवायु, स्वच्छता और पोषण के बारे में जागरूकता बढ़ाने की गतिविधियाँ पाठ्यक्रम में शामिल हैं। इन संदेशों को व्यक्त करने के लिए कठपुतली शो और गीत और तुकबंदी जैसी नवीन तकनीकों का उपयोग किया जाता है। बच्चों के लिए गतिविधि–आधारित शिक्षण एक शिक्षण दृष्टिकोण है जो बच्चों को पर्यवेक्षित गतिविधियों की एक श्रृंखला में शामिल करके उनकी गति से सीखने के लिए प्रोत्साहित करती है। यह बच्चों को निर्देश देने का अधिक आकर्षक और सहयोगात्मक तरीका है। यह सीखने का एक रोचक तरीका है क्योंकि यह निरंतर उत्तेजना और त्वरित प्रतिक्रियाएँ प्रदान करके बच्चों के मस्तिष्क के विकास को बढ़ावा देता है। गतिविधि–आधारित शिक्षण को पूरा करने के लिए **अन्वेषण, प्रयोग** और **भाषण** तीन तरीके हैं। प्रत्येक बीतते दिन के साथ, सीखने की रणनीति अधिक वैश्विक और तेज़ होती जाती है।

निष्कर्ष

गतिविधि–आधारित शिक्षण अधिगम आधुनिक शिक्षा प्रणाली कक्षा में प्रौद्योगिकी को शामिल करती है। इस तकनीकी युग में आधुनिक शिक्षण सामग्री अत्यंत आवश्यक है। हमारे चारों ओर मौजूद डिजिटल ज्ञान की बढ़ती मात्रा, साथ ही अब सीखने के माहौल में लागू की जा रही प्रौद्योगिकी ने कक्षा और कार्यस्थल दोनों को प्रभावित किया है। एक स्वस्थ वयस्क का जन्म न केवल उस बच्चे से होता है जिसे महत्वपूर्ण सामाजिक और भावनात्मक सबक सिखाए गए हैं, बल्कि उस बच्चे से भी पैदा होता है जिसे महत्वपूर्ण सामाजिक और भावनात्मक सबक सिखाए गए हैं। गतिविधि–आधारित शिक्षण अधिगम दृष्टिकोण विशेष रूप से बच्चों के लिए आदर्श शिक्षण पद्धति है। इस दृष्टिकोण का मूल्य इस हद तक बढ़ गया है कि खिलौना निर्माता भी इसका उपयोग गतिविधि–आधारित शिक्षण अधिगम और शैक्षिक खिलौने विकसित करने के लिए कर रहे हैं। यह बच्चों को व्यस्त रखने और उनके दिमाग को तेज करने में मदद करता है। इसमे सबसे अच्छी बात यह है कि यह शिक्षकों और छात्रों दोनों के प्रयासों से किया जा सकता है।

एक शिक्षक चाहे वह कितना भी मूर्ख क्यों न हो, एक छात्र के लिए कक्षा में ध्यान देने के लिए एक शक्तिशाली प्रेरक है। यदि छात्रों को कक्षा में रुचि नहीं है, तो एक अलग प्रश्न और उत्तर सत्र सभी से बात करने का एक अच्छा तरीका है। विभेदीकरण और एकीकरण का वर्णन करने वाला एक साइन मानचित्र छात्रों के लिए गणित में भी देखने और सीखने के लिए उपयोगी हो सकता है। इसे शिक्षक या छात्रों द्वारा बनाया जा सकता है, और इसे कक्षा में दिखाया जा सकता है ताकि छात्र इसे नियमित रूप से देख सकें और अवधारणाओं को सीख सकें। कक्षा में खेलने एंव नए शब्द या अवधारणाओं को सीखने में मदद के लिए कोई स्क्रैबल गेम या शब्द पहेली पर विचार किया जा सकता है। विद्यार्थियों को इसमें आनंद आएगा क्योंकि वे कुछ अलग करने का प्रयास कर सकेंगे और इस प्रकार की गतिविधियों के आधार पर ही छात्रों के साथ साथ शिक्षकों को भी लाभ होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

पाण्डेय. बी. (2015). प्राथमिक कक्षाओं में गतिविधि–आधारित शिक्षण. प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली।

पुरोहित. जे. एन., शर्मा. एम. एम. (2002). भावी शिक्षकों के लिए आधारभूत कार्यक्रम. राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ एकादमी, जयपुर।

अनवर. एफ. (2019). एक्टीविटी बेस्ड टिचिंग, स्टूडेन्ट मोटिवेशन एण्ड एकेडमिक अचिवमेंट. जर्नल ऑफ एजूकेशन एण्ड एजूकेशनल डवलपमैंट. 6(1) 154.170।

प्रिग. डी. जे. (2002). प्रमोट ब्रेन– बेस्ड टिचिंग एण्ड़ लर्निंग. इनविटेशन इन स्कूल एण्ड़ क्लिनिक. 37(4) 237.241।

अलाकून. ए. एम. वाई. एस. टी. (2020). एक्टीविटी बेस्ड टिचिंग मेथड़ फॉर इफैक्टिव इग्लिश लैग्वेज टिचिंग इन प्राइमरी एजूकेशन. शाबारागामूआ यूनिवर्सिटी ऑफ श्रीलंका।